

Jan 1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31
Feb 1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31

B.A - Part - III

Sub - Pol. Science

Paper - III (Political Thought)

10 Topic - "प्रॉटेस्टर का राज की उत्पत्ति एककची विचार एवं विधि एककची विचार"

DR. Anamgaj Singh  
Asst. Prof. HUCD faculty / part time  
Dept. of Pol. Science.  
L.S. College, Muramba  
M - 8210688013.

→ संकेतक है कि जहाँ एक ओर होल्स, लॉक और जेने ने राज की उत्पत्ति के एककच्य में सामाजिक अनुकच्य का सिद्धांत (Theory of Social Contract) का प्रतिपादन किया है, या हम यों कहें कि राज की उत्पत्ति होल्स, लॉक एवं जेने के सामाजिक अनुकच्य/ सामाजिक समझौता सिद्धांत (Social Contract Theory) का प्रतिपादन है वहीं दूसरी ओर हम देखते हैं कि प्रॉटेस्टर ने राज की उत्पत्ति के एककच्य में सामाजिक अनुकच्य या सामाजिक समझौता के सिद्धांत के आलोका करते हुए राज की उत्पत्ति का कबल उपरुक्त वातावरण एवं परिस्थितियों से जाना है।

→ प्रॉटेस्टर के अनुसार, मानव का आरंभिक अवस्था में निवास समूह/ समूहविहीन वातावरण में था। अत्र विवाहों की भांति प्रॉटेस्टर भी मानव के प्राकृतिक अवस्था को प्राकृतिक अवस्था की ही संज्ञा देता है। साथ ही वह यह भी मत व्यक्त करता कि प्रकृतिक अवस्था प्राकृतिक अवस्था आंत और उत्पन्न नहीं थी। वह कहता है कि प्रकृतिक अवस्था में समूहों की वृद्धि थी किन्तु मनः-2 परिस्थितियों वरुदा, प्रकृतिक अवस्था में वृद्धि एवं ज्ञान का विकास हुआ और राज की अवस्था से वह प्रकृतिक अवस्था से आता है।

If you want to change, you have to be willing to be uncomfortable.

Wk	S	M	T	W	T	F	S
49		1	2	3	4	5	
50	6	7	8	9	10	11	12
01	13	14	15	16	17	18	19
02	20	21	22	23	24	25	26
03	27	28	29	30	31		

Wk	S	M	T	W	T	F	S
01	31						1
02	3	4	5	6	7	8	9
03	10	11	12	13	14	15	16
04	17	18	19	20	21	22	23
05	24	25	26	27	28	29	30

⇒ प्रोफेक्टर लख गोट पर कहता है कि कहलते हुए परिस्थिति के अनुसार मनुष्य में ऐसी भावनाएं जाग्रत होने लगी कि अपने से निर्बल व्यक्तियों को हवाकर उसे अपने नियंत्रण में रखा जाए, अर्थात् प्रमुख व्यक्ति की भावना जाग्रत हो उठी। इससे अस्वों में हठ बढ लगे है कि मनुष्यों में अपने से निर्बलों पर शासन करने की भावना का बल उठा। मनुष्यों की इस प्रवृत्ति का सामाजिक परिणाम यह निकला कि धृष्ट और लचक की भावनाएं उत्तरोत्तर बढ़ती हुई क्रमशः लगी लगे एक इससे को हवाकर उन पर शासन करने की हिम्मा में लाने लगे। इस तरह मानव इतिहास में एक ऐसी अवस्था जो आई जिसमें शासक और शासित इन दो को का आकार उठा। इस प्रकार हम देखते हैं कि शासन करने की बलती हुई प्रवृत्ति, विशेष परिस्थितियों और उपयुक्त वातावरण के कारण ही राज राज लगे की उत्पत्ति हुई।

⇒ प्रोफेक्टर ने मानव स्वभाव प्राकृतिक अवस्था और राज्य की उत्पत्ति का जो चित्रण प्रस्तुत किया है, वह होल और लोक के चिन्तनों के लक्ष्यमिन है। उलका मानना है कि प्राकृतिक अवस्था में मनुष्य जीव एवं मूर्ख थे।

⇒ प्रोफेक्टर सामाजिक संविदा | सामाजिक समझौता | सामाजिक अनुबंध के सिद्धान्त को पूर्णता देकरते हुए राज्य की एक सामग्री | आंगिक (Contractual) कल्पना प्रस्तुत करता है और राज्य को वातावरण का अज तमा स्वतः विकसित होने वाला संस्था मानता है। इस बात को ज्ञान ने अपने अस्वों में वर्णन करते हुए लिखा है कि प्रोफेक्टर के लिए राज्य, उसके लक्ष्यों के बीच सामाजिक संविदा/अनुबंध समझौता का परिणाम नहीं था अपितु अपने वातावरण की अज मा और प्रकृति के कान से उठता सित था। इस प्रकार, प्रोफेक्टर के लिए राज्य का स्वल्प सामग्य (Contractual) था।

Kindness is a language which the deaf can hear and the blind can see.

Important Meetings	Important Calls	Important Works

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27	28	29	30

January 2016							February 2016								
Wk	S	M	T	W	T	F	S	Wk	S	M	T	W	T	F	S
01	31						1	00	1	2	3	4	5	6	
02	3	4	5	6	7	8	9	07	7	8	9	10	11	12	
03	10	11	12	13	14	15	16	08	14	15	16	17	18	19	
04	17	18	19	20	21	22	23	09	21	22	23	24	25	26	
05	24	25	26	27	28	29	30	10	28	29	*	*	*	27	

← : पाण्डेस्कन्धु का विधि लक्ष्म्या विचार : →

09

08

10 यदि जोर से देखा जाए तो पाण्डेस्कन्धु के कानून अथवा विधि की व्याख्या ही वास्तव में वह छूट है जो मिसा, फ्रांसीसी राजतन्त्र के इतिहास, अर्थशास्त्र, जलवायु, भूगोल, ब्रिटिश संविधान एवं बहुत से अन्य विषयों पर प्रकट

11 किन्तु जगत् असम्बद्ध विचारों को एका के बन्धन में बन्धने का कार्य करता है। पाण्डेस्कन्धु की विधि लक्ष्म्या व्याख्या अन्य लगी व्याख्याओं में सबसे अधिक कठिन किन्तु सबसे अधिक रोचक एवं महत्वपूर्ण है।

12

01 → पाण्डेस्कन्धु से पूर्ण की बात यदि किया जाए तो इसके पहले कानून के स्वल्प के लक्ष्म्य में विभिन्न व्याख्याएं प्रचलित थीं। कुछ विचारक इसे विवेक - बुद्धि का आदेश (Command of Reason) समझते थे, इण्डियन के तौर पर इन ल्लेयों एवं अर्थों का ज्ञान ले सकते हैं। वहीं इसमें ओर ओर एवं होल्सजैस विचारक इसे (कानून/विधि को) उच्चतर शक्ति/सर्वोच्च शक्ति का आदेश (Command of the Supremacy) मानते थे।

02

03 → पाण्डेस्कन्धु ने प्लेटो एवं अरिस्तो तथा ओरों एवं होल्स के विचारों से असम्बन्धित प्रकट करते हुए कहा कि कानून अपने विस्तृत अर्थ में वस्तुओं की प्रकृति या स्वभाव से उत्पन्न होने वाले आवश्यक लक्ष्य

04 न्य है (Law are the necessary relations परामर्शपूर्ण जगत् the nature of things)। इस प्रकार हम देखते हैं कि कानून को व्यापक रूप (Comprehensive form) देकर ओर अर्थ - कारण के सामान्य लक्ष्म्य (General relationship of Cause and effect) को इसके अनन्तत समाविष्ट करके पाण्डेस्कन्धु ने वस्तुतः अपने अर्थ (स्पिरिट ऑफ लॉ) में कानून के एक नये स्वरूप का जन्मदाता/निर्माण किया है जहाँ कारण है कि कानून आत्मिक

05

Limitations live only in our minds. But if we use our imaginations, our possibilities become limitless. - Jamie Paolinetti

Important Works	Important Calls	Important Meetings

ने स्पष्ट तौर पर कहा है कि ऐतिहासिक विधिज्ञान का अभ्यन्तन 'स्ट्रिट ऑफ लोज' से आरम्भ होगा ही।

⇒ प्राणेश्वर द्वारा प्रस्तुत कर्म के उपर्युक्त लक्षण वाली स्थापना है और संसा। निम्न की लक्षण जड़-चेतन वस्तुओं के लक्षण में ही वह आज कहता है कि प्रकृति जगत् बुद्धिमान है क्योंकि वन में लक्ष्मण - लक्ष्मण की जन्म नहीं है। यह शून्य-शून्य से चला आ रहा था तथा इसे अंतु ज्ञानिने करने वाले निम्न स्थायी, अविच्छेदी और अपरिवर्तनीय हैं।

⇒ प्राणेश्वर मानव - स्वभाव (Human nature) का वर्णन करते हुए आगे कहता है कि प्रकृति अज्ञानी और अज्ञान, क्रोध, लोभ, मोह आदि की शक्तियों के बंध में फँस जाने वाली प्राणी (being) है। वह ईश्वर द्वारा प्रकृत की गई वास्तु शक्ति एवं अन्य शक्तियों का दुर्लभ प्रयोग करता है। प्रकृति को मानव कहते हुए प्राणेश्वर कहता है कि प्रकृति अपनी प्रजनन शक्ति का दुर्लभ प्रयोग अपनी कृपणता के लक्षण करने के लिए करता है। प्राणेश्वर का यह भी मानना है कि प्रकृति के लिए यह सब शक्ति है कि वह आकेतों में बस ईश्वर के प्रति अपने लक्ष्यों को निरूपित कर ले। अतः इसे इनका लक्षण मानने हेतु धर्म के कर्म (धार्मिक कर्म) हैं।

⇒ प्राणेश्वर का स्पष्ट तौर पर कहना है कि अन्न ली निम्नो शक्तियों के बन्ने से पूर्व प्रकृति अपने प्राकृतिक लक्ष्य / प्राकृतिक अवस्था के प्राकृतिक निम्नो से अनुमानित होगा था। उसके विना से प्रकृति को प्रकृत निम्न आल वसा (Self preservation), अंगि एवं लुप्ता के आकांक्षा ही उसके मानना है कि प्राकृतिक शक्तियों में

Worry is a total waste of time. It doesn't change anything. All it does is steal your joy and keep you very busy doing nothing

Important Meetings

Important Calls

Important Works

WK	S	M	T	W	T	F	S	WK	S	M	T	W	T	F	S
49		1	2	3	4	5		01	31					1	2
50	6	7	8	9	10	11	12	02	3	4	5	6	7	8	9
51	13	14	15	16	17	18	19	03	10	11	12	13	14	15	16
52	20	21	22	23	24	25	26	04	17	18	19	20	21	22	23
53	27	28	29	30	31			05	24	25	26	27	28	29	30

ने स्पष्ट तौर पर कहा है कि ऐतिहासिक विधिमान्य का अन्वयन 'स्पिरिट ऑफ लॉज' से आरम्भ होगा ही. 09

⇒ प्राणेश्वर द्वारा प्रस्तुत कर्म के उपर्युक्त लक्षण काफी व्यापक है और असाधारण। विभव की लक्षण जड़-चेतन वस्तुओं के सम्बन्ध में ही वह आगे कहता है कि प्रकृति जगत् बुद्धिचरित है क्योंकि वेदों से चला आ रहा था तब इसे अदुःसाहित करने वाले निग्रह लक्ष्मी, अविद्या और अपरिवर्तनशील हैं। 12

⇒ प्राणेश्वर पानव-स्वाभाव (Panavam nature) का वर्णन करते हुए आगे कहता है कि प्रकृति अज्ञानी और काम, क्रोध, लोभ मोह आदि की शक्तियों के बल में फँस जाने वाला प्राणी (being) है, वह ईश्वर द्वारा प्रकृत की गई वाक्य शक्ति एवं अन्न शक्तियों का दुःखयोग करता है। प्रकृति के आगे बढ़ते हुए प्राणेश्वर कहता है कि प्रकृति अपनी प्रजनन शक्ति का दुःखयोग अपना कृपका के लक्षण करने के लिए करता है। प्राणेश्वर का यह भी मानना है कि प्रकृति के लिए महत्त्वात्माविक है कि वह आँसुओं में बहता ईश्वर के प्रति अपने लक्ष्मियों को निरक्षर कर दे। अतः इसे इनका लक्षण करने हेतु चरित के कर्म (धार्मिक कर्म) हैं। 04

⇒ प्राणेश्वर का स्पष्ट तौर पर कहा है कि अन्न लक्ष्मी शक्तियों के बल से पूर्व प्रकृति अपने प्राकृतिक लक्ष्मा / प्राकृतिक शक्तियों के प्राकृतिक शक्तियों से अदुःसाहित होता था। उसके विचार से प्रकृति को प्रकृत निग्रह आणवत्ता (Self preservation), शक्ति एवं लक्ष्मा के आकांक्षा ही इतका मानना है कि प्राकृतिक शक्तियों में 05

Worry is a total waste of time. It doesn't change anything. All it does is steal your joy and keep you very busy doing nothing.

Important Meetings

Important Calls

Important Works

	T	W	T	F	S
5	6	7	8	9	
12	13	14	15	16	
19	20	21	22	23	
26	27	28	29	30	

WK	S	M	T	W	T	F	S
01	31				1	2	
02	3	4	5	6	7	8	9
03	10	11	12	13	14	15	16
04	17	18	19	20	21	22	23
05	24	25	26	27	28	29	30

WK	S	M	T	W	T	F	S
06	1	2	3	4	5	6	
07	7	8	9	10	11	12	13
08	14	15	16	17	18	19	20
09	21	22	23	24	25	26	27
10	28	29	*	*	*	*	

09 पानव इशपोक था। आलस्यो की भावनाओं और लंकेयों से बचने के लिए तम्रा भोजन, वस्त्र और आवास लम्बे-लम्बे आवरण-वस्त्रों की पूर्ति के लिए पानव-स्वभाव ने उले लगवतः शीघ्र ही अन्न मनुष्यों के लाभ संगति होने के लिए उप्रेषित किया। प्रकृति का इत्थम नियम यह है कि जीवन-निर्वाह और सुखों के लिए पदुक्त को अपने अन्न लाभियों के लाभ संगति होना चाहिए।

11 ⇒ पाण्डेस्वरु के पताभूसा, पदुस्त पाल्य इतरे व्यक्तियों के लाभ मिल कर अपनी शक्ति बूझने लगे और इस प्रकार लक्षण में शुल्य की स्थिति उत्पन्न हो गई। अब पानवाय आचरण सिर्फ प्रकृति के नियमों/प्राकृतिक नियमों से अनुत्पन्न नहीं रह सका, तब इन अवस्था में प्राकृतिक नियमों की पूर्ति पानव-इत करुणों द्वारा कनी पड़ी।

12 ⇒ पाण्डेस्वरु के अनुसार, प्रकृति जगत् में केवल एक ही प्रकार के करुण होते हैं, जबकि पानव-जगत् में दो प्रकार के करुण होते हैं। जैसा कि जोत्स ने लिखा है पानव-करुणों के क्षेत्र में प्राकृतिक करुण के अलावा एक प्रकार का अन्न करुण भी होता है जिसे पाण्डेस्वरु विद्येयालक अत्रवा पानवइत करुण की संज्ञा देता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि पाण्डेस्वरु दो प्रकार के करुण की बात करता है पुराण-प्राकृतिक करुण और द्वितीय पानव-इत करुण अत्रवा पानवाय करुण। पानवाय करुण को ही वह विद्येयालक करुण भी कहता है।

पानवाय करुण की प्रकृति

⇒ पाण्डेस्वरु पानवाय करुण की प्रकृति को बतलाते हुए प्राकृतिक करुणों से इनके अन्न को स्पष्ट करता है।

Happiness is not the absence of problems, it's ability to deal with them.

Important Works

Important Calls

Important Meetings

Wk	S	M	T	W	T	F	S	Wk	S	M	T	W	T	F	S
48		1	2	3	4	5		01	31				1	2	
49	6	7	8	9	10	11	12	02	3	4	5	6	7	8	9
50	13	14	15	16	17	18	19	03	10	11	12	13	14	15	16
51	20	21	22	23	24	25	26	04	17	18	19	20	21	22	23
52	27	28	29	30	31			05	24	25	26	27	28	29	30

1. मानव-इत कानून या मानवीय कानून या सामाजिक कानून या विधेयात्मक कानून, विधेयात्मक कानून बनाये हुए विभिन्न और सुनिश्चित संरक्षण होते हैं।

2. ये कानून (मानवीय कानून) सार्वभौमिक (Universal) नहीं होते और न ही यह अपेक्षक हैं कि वे अपेक्षित हों।

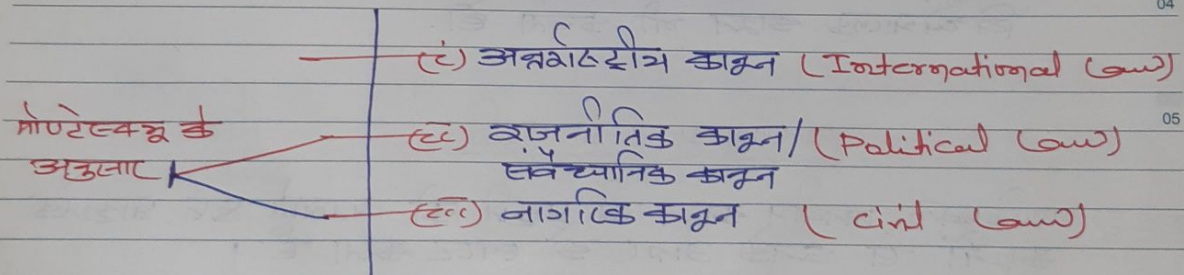
3. ये कानून परिवर्तनीय होते हैं, इन पर समाज के स्वभाव, जलवायु, धर्म, नैतिक नियमों आदि का प्रभाव पड़ता है।

4. समाज में होने वाले परिवर्तनों और विकास से मानव कानून-युक्त कानून (मानवीय कानून) प्रभावित होते रहते हैं। समाज ही कानून, काल, परिस्थिति और समाज नियमों के चक्रों के स्वभाव में परिवर्तन लाते रहते हैं।

Note:

अपने सम्पूर्ण रूप में कानून वह चीज है जो समाज के उसके विभिन्न और अद्वितीय-चरित्र प्रकृत होते हैं।

मानवीय कानून | सामाजिक कानून | विधेयात्मक कानून के प्रकार:



Violence, even will intentioned, always rebounds upon oneself - Lao Tzu

Important Meetings	Important Calls	Important Works